

CHAPTER FIVE	अध्याय पांच
Jealousy; Possessiveness; Envy	ईर्ष्या, स्वामित्वभाव, डाह
-1-	- 9-
To Think We Own a Human Being Makes Us Feel Important	यह सोचना कि मैं किसी का स्वामी हूं, हमें महत्त्वपूर्ण होने का एहसास देता है।
Jealousy is one of the ways of holding the man or the woman, is it not? The more we are jealous, the greater the feeling of possession. To possess something makes us happy; to call something, even a dog, exclusively our own makes us feel warm and comfortable. To be exclusive in our possession gives us assurance and certainty to ourselves. To own something makes us important; it is this importance we cling to. To think that we own, not a pencil or a house, but a human being, makes us feel strong and strangely content. Envy is not because of the other, but because of the worth, the importance of ourselves.	ईर्ष्या किसी पुरुष या किसी स्त्री को अपने स्वामित्व में बनाए रखने का एक ढंग है। हम जितने अधिक ईर्ष्यालु होंगे, हमारा स्वामित्वभाव उतना ही प्रबल होगा। अपने स्वामित्व में किसी को रखने से हमें खुशी मिलती है, किसी पर, यहां तक कि कुत्ते पर भी, अपना एकाधिकार जताना हमें भला और सुखद लगता है। उस पर अपना एकमेव स्वामित्व हमें सुनिश्चितता और आत्मविश्वास से भर देता है। किसी का स्वामी होना हमें महत्त्वपूर्ण बना देता है और यह महत्त्वपूर्ण होना ही है जिससे हम चिपके रहते हैं। यह सोचना कि हम स्वामी हैं--किसी पेंसिल या किसी भवन के नहीं बल्कि किसी व्यक्ति के स्वामी हैं--यह हमें सशक्तता और एक विचित्र सी संतुष्टि का एहसास देता है। डाह किसी दूसरे के कारण नहीं होती बल्कि अपनी ही हैसियत, अपनी ही अहमियत के



	कारण होती है।
"But I am not important, I am nobody; my husband is all that I have. Even my children don't count."	“परंतु मैं तो महत्वपूर्ण नहीं हूँ, मैं तो कुछ हूँ ही नहीं। जो कुछ मेरे पास है वह सब मेरे पति का है। यहां तक कि बच्चे भी मेरे हिसाब में नहीं आते।”
We all have only one thing to which we cling, though it takes different forms. You cling to your husband, others to their children, and yet others to some belief; but the intention is the same. Without the object to which we cling we feel so hopelessly lost, do we not? We are afraid to feel all alone. This fear is jealousy, hate, pain. There is not much difference between envy and hate.	हम सब किसी न किसी चीज़ से चिपके रहते हैं--भले ही उनके रूप-स्वरूप भिन्न-भिन्न हों। आप अपने पति से जुड़ी हैं तो कोई अपने बच्चों से जुड़ा है और अन्य कोई किसी विश्वास से; परंतु आशय सबका एक ही है। जिस चीज़ से हम जुड़ते हैं उसके बिना हम स्वयं को निराशाजनक रूप से खोया-खोया पाते हैं, है न? एकाकी होने से हम भयभीत होते हैं। यह भय ही है ईर्ष्या, घृणा और पीड़ा। डाह और घृणा में कोई विशेष अंतर नहीं होता।
—2—	-२-
Jealousy Is Not Love	ईर्ष्या प्रेम नहीं है
"But we love each other."	“परंतु हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं”
Then how can you be jealous? We do not love, and that is the unfortunate part of it. You are using your husband, as he is using you, to be happy, to have a companion, not to feel alone; you may not possess much, but at least you have someone to be with. This mutual need and use we call love.	तब आप ईर्ष्यालु कैसे हो सकते हैं? हम वास्तव में प्रेम नहीं करते और इस बात का यही दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है। आप अपने पति का केवल उपयोग कर रही हैं, ठीक वैसे ही जैसे वह आप का कर रहे हैं--खुशी के लिए, सुख-चैन के लिए, एक संग-साथ पाने के लिए जिससे अकेलापन महसूस न हो। भले ही आपके स्वामित्व में अधिक कुछ न हो, परंतु आपके पास कम से कम कोई संग-साथ के लिए तो हो। इस परस्पर आवश्यकता और उपयोग को हम प्रेम कह देते हैं।
"But this is dreadful."	“परंतु यह तो बड़ी भयावह बात है।”
It is not dreadful, only we never look at it. We call it dreadful, give it a name and quickly look away—which is what you are doing.	यह भयावह नहीं है, इसे केवल हम देखते नहीं हैं। हम इसे भयावह बता देते हैं, इसे बस एक नाम दे देते हैं और इससे नज़र फेर लेते हैं--यही तो हम कर रहे हैं।
"I know, but I don't want to look. I want to carry on as I am, even though it means	“मैं जानती हूँ, परंतु इसे देखना नहीं चाहती। मैं जैसी हूँ वैसी बनी रहना चाहती हूँ, भले ही

<p>being jealous, because I cannot see anything else in life."</p>	<p>इसका अर्थ ईर्ष्यालु होना होता हो, क्योंकि इसके अतिरिक्त मेरे जीवन में और कुछ है नहीं।”</p>
<p>If you saw something else you would no longer be jealous of your husband, would you? But you would cling to the other thing as now you are clinging to your husband, so you would be jealous of that too. You want to find a substitute for your husband, and not freedom from jealousy. We are all like that: before we give up one thing, we want to be very sure of another. When you are completely uncertain, then only there is no place for envy. There is envy when there is certainty, when you feel that you have something. Exclusiveness is this feeling of certainty; to own is to be envious. Ownership breeds hatred. We really hate what we possess, which is shown in jealousy. Where there is possession there can never be love; to possess is to destroy love.</p>	<p>यदि आपके पास कुछ और होता तो आप अपने पति के संदर्भ में ईर्ष्यालु न होतीं, परंतु तब आप किसी अन्य बात से जुड़ी होतीं, वैसे ही जैसे अब आप अपने पति से जुड़ी हैं, तब आप ऐसे ही उस चीज़ के बारे में ईर्ष्यालु होतीं। आप अपने पति का विकल्प तलाश रही हैं, न कि ईर्ष्या से मुक्ति चाह रही हैं। हम सभी ऐसे हैं; जब हम कोई चीज़ छोड़ना चाहते हैं तब हम दूसरी को सुनिश्चित कर लेना चाहते हैं। जब हम पूरी तरह अनिश्चित होते हैं केवल तब ही डाह के लिए कोई संभावना शेष नहीं रहती। डाह तभी होती है जब आप निश्चित होते हैं, जब आप को लगता है कि आप के पास कुछ है। निश्चितता का यह एहसास एकाधिकार होता है और डाह करना स्वामित्व होता है। स्वामित्वभाव नफरत पैदा करता है। जो हमारे पास है वास्तव में उसे हम पसंद नहीं करते—और यह बात ईर्ष्या के रूप में प्रकट होती है। जहां स्वामित्वभाव होगा वहां कभी प्रेम नहीं हो सकता, अधिकारभाव रखना तो प्रेम को नष्ट करना है।</p>
<p>— 3 —</p>	<p>-३-</p>
<p>Attachment to Reputation, Things, a Person, Causes Pain</p>	<p>किसी व्यक्ति, वस्तु या प्रतिष्ठा से आसक्ति पीड़ा का कारण बनती है</p>
<p>The present culture is based on envy, on acquisitiveness... Success is pursued in different ways, success as an artist, as a businessman, as a religious aspirant. All this is a form of envy, but it is only when envy becomes distressing, painful, that one attempts to get rid of it. As long as it is compensating and pleasurable, envy is an accepted part of one's nature. We don't see that in this very pleasure there is pain. Attachment does give pleasure, but it also breeds jealousy and pain, and it is not love. In this area of activity one lives, suffers, and dies. It is only when the pain of this self-enclosing action becomes unbearable that one struggles to break</p>	<p>आज की संस्कृति डाह पर, हड़प लेने की प्रवृत्ति पर टिकी हुई है . . . सफलता हासिल करने के तमाम तरीके अपनाये जा रहे हैं। एक कलाकार के रूप में, व्यापारी या धार्मिक महत्त्वाकांक्षी के रूप में सफल होना। ये सब डाह के ही रूप हैं परंतु कोई इससे तभी पीछा छुड़ाना चाहता है जब यह डाह दुखकारी और कष्टकारी बन जाती है। जब तक डाह लाभदायक व सुखकारक बनी रहती है तब तक यह तो अपनी फितरत में है ऐसा मानकर इसे स्वीकार कर लिया जाता है। हम यह नहीं देख पाते कि इस सुख के पीछे पीड़ा भी खड़ी है। आसक्ति सुख देती है परंतु साथ में ईर्ष्या और पीड़ा को भी जन्म देती है, और यह प्रेम नहीं है। अपने क्रियाकलापों की इसी परिधि में</p>

through it.	हम रहते हैं, कष्ट भोगते हैं और मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। इसे तोड़कर बाहर आने के लिए हम केवल तभी संघर्ष करते हैं जब अपनी ही बनायी सीमाओं में परिवर्द्ध कार्यकलापों की पीड़ा असहनीय हो उठती है।
"I think I vaguely grasp all this, but what am I to do?"	“मेरे विचार से मैं इसे कुछ-कुछ समझ पा रही हूँ, परंतु मुझे करना क्या है?”
Before considering what to do, let us see what the problem is. What is the problem?	क्या करना है इस पर विचार करने से पूर्व हम यह तो देखें कि समस्या क्या है। तो समस्या है क्या?
"I am tortured by jealousy and I want to be free from it."	“ईर्ष्या मुझे बहुत सता रही है। मैं इससे मुक्ति चाहती हूँ?”
You want to be free from the pain of it; but don't you want to hold on to the peculiar pleasure that comes with possession and attachment?	आप इसकी पीड़ा से तो मुक्त होना चाहती हैं परंतु स्वामित्वभाव और आसक्ति से मिलने वाले उस सुख विशेष को क्या आप थामे रखना नहीं चाह रहीं?
"Of course I do. You don't expect me to renounce all my possession, do you?"	“यह तो सच है, पर क्या आप मुझसे मेरे अधिकारभाव को पूरी तरह से त्याग देने की अपेक्षा कर रहे हैं?”
We are not concerned with renunciation but with the desire to possess. We want to possess people as well as things, we cling to beliefs as well as hopes. Why is there this desire to own things and people, this burning attachment?	हमारा सरोकार त्याग से नहीं बल्कि अधिकारभाव की चाहत से है। हम व्यक्तियों को, और वस्तुओं को भी, अपने स्वामित्व में ले लेना चाहते हैं। हम किन्हीं विश्वासों, और आशाओं से भी चिपके रहना चाहते हैं। वस्तुओं और व्यक्तियों का स्वामी बनने की यह चाहत, यह ललकती आसक्ति हममें क्यों है?
"I don't know, I have never thought about it. It seems natural to be envious, but it has become a poison, a violently disturbing factor in my life."	“मैं नहीं जानती। मैंने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं है। ईर्ष्यालु होना स्वाभाविक लगता है, परंतु मेरे जीवन में यह विष बन गया है, प्रचंड उद्विग्नता का कारण बन गया है।”
We do need certain things, food, clothing, shelter; and so on, but they are used for psychological satisfaction, which gives rise to many other problems. In the same way, psychological dependence on people breeds anxiety, jealousy and fear.	हमें कुछ चीजों की आवश्यकता होती है, जैसे भोजन, वस्त्र, आवास आदि, परंतु जब इन्हें मनोवैज्ञानिक तुष्टि के लिए प्रयोग किया जाता है तब अनेक समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। इसी प्रकार, व्यक्तियों पर मनोवैज्ञानिक निर्भरता भी व्यग्रता और भय को जन्म देती है।

"I suppose in that sense I do depend on certain people. They are a compulsive necessity to me, and without them I would be totally lost. If I did not have my husband and children I think I would go slowly mad, or I would attach myself to somebody else. But I don't see what is wrong with attachment."	“इस दृष्टि से तो शायद मैं कुछ व्यक्तियों पर निर्भर हूँ। वे मेरे लिए अनिवार्य आवश्यकता हैं। उनके बिना तो मैं कहीं की नहीं रहूंगी। मेरे पास मेरे पति और बच्चे न रहें तो मैं शायद पागल ही हो जाऊंगी। या मुझे किसी अन्य में आसक्त होना होगा। परंतु मैं नहीं समझ पा रही हूँ कि आसक्ति में बुराई क्या है?”
We are not saying it is right or wrong but are considering its cause and effect, are we not? We are not condemning or justifying dependence. But why is one psychologically dependent on another?	हम इसके अच्छे या बुरे होने पर विचार नहीं कर रहे हैं, बल्कि इसके कारण और प्रभाव पर विचार कर रहे हैं, है न? हम निर्भरता की निंदा या अनुशंसा नहीं कर रहे। परंतु, मनोवैज्ञानिक तौर पर कोई —किसी दूसरे पर निर्भर क्यों रहता है?
"I know I am dependent, but I haven't really thought about it. I took it for granted that everyone is dependent on another."	“मैं जानती हूँ कि मैं निर्भर हूँ, परंतु मैंने वास्तव में कभी इस बारे में सोचा नहीं। मैंने स्वयं यह सहज स्वीकार कर लिया है कि हर कोई किसी न किसी पर निर्भर रहता ही है।”
-4-	-४-
Physical Dependence Is not Psychological Dependence	शारीरिक निर्भरता मनोवैज्ञानिक निर्भरता नहीं है
Of course we are physically dependent on each other and always will be, which is natural and inevitable. But as long as we do not understand our psychological dependence on another don't you think the pain of jealousy will continue? So why is there this psychological need of another?	यह सच है कि हम शारीरिक रूप से एक दूसरे पर निर्भर हैं और रहेंगे—यह प्राकृतिक है, अपरिहार्य है। परंतु, जब तक हम दूसरों पर अपनी मनोवैज्ञानिक निर्भरता को समझ नहीं लेते, तब तक क्या ईर्ष्या की पीड़ा बनी नहीं रहेगी? कोई और हमारे लिए मानसिक रूप से ज़रूरी क्यों बन जाता है?
"I need my family because I love them. If I didn't love them I wouldn't care..."	“मुझे अपने परिजनों की आवश्यकता है क्योंकि मैं उन्हें प्रेम करती हूँ। यदि मैं उन्हें प्रेम न करती तो उनकी परवाह क्यों करती..”
You want to keep the pleasure of attachment and let the pain of it go. Is this possible?	आप उनके साथ आसक्ति का सुख तो उठाना चाहती हैं परंतु इसकी पीड़ा से दूर रहना चाहती हैं। क्या यह संभव है?
"Why not?"	“क्यों नहीं?”
Attachment implies fear, does it not? You	आसक्ति में भय सम्मिलित रहता है, या नहीं?

<p>are afraid of what you are, or of what you will be if the other leaves you or dies, and you are attached because of this fear. As long as you are occupied with the pleasure of attachment, fear is hidden, locked away, but unfortunately it is always there; and till you are free from this fear, the tortures of jealousy will go on.</p>	<p>आप को भय रहता है कि वह दूसरा व्यक्ति यदि आपको छोड़ दे, या दिवंगत हो जाए तो आपका क्या होगा। इसी भय के कारण आप उससे जुड़े रहते हैं। जब तक आप आसक्ति के सुख में जीते हैं तब तक भय भी बना रहता है--छिपा हुआ, दबा-ढका हुआ, परंतु वह विद्यमान रहता है। और, जब तक आप इस भय से मुक्त नहीं हो जाते, तब तक ईर्ष्या अपना तांडव करती रहेगी।</p>
<p>-5-</p>	<p>-५-</p>
<p>The Top of the Heap</p>	<p>ढेर के शिखर पर</p>
<p>Do you know what life is? It extends from the moment you are born to the moment you die, and perhaps beyond. Life is a vast, complex whole; it's like a house in which everything is happening at once. You love and you hate; you are greedy, envious, and at the same time you feel you shouldn't be. You are ambitious, and there is either frustration or success, following in the wake of anxiety, fear and ruthlessness; and sooner or later there comes a feeling of the futility of it all. Then there are the horrors and brutality of war, and peace through terror; there is nationalism, sovereignty, which supports war; there is death at the end of life's road, or anywhere along it. There is the search for God, with its conflicting beliefs and the quarrels between organized religions. There is the struggle to get and keep a job; there are marriage, children, illness, and the dominance of society and the State. Life is all this, and much more; and you are thrown into this mess. Generally you sink into it, miserable and lost; and if you survive by climbing to the top of the heap, you are still part of the mess. This is what we call life: everlasting struggle and sorrow, with a little joy occasionally thrown in. Who is going to teach you about all this? Or rather, how are you going to learn about it? Even if you have capacity and talent, you are bounded by ambition, by the desire for fame, with its</p>	<p>क्या आप जानते हैं कि जीवन क्या है? यह आपके जन्म के पल से मृत्यु के पल तक का विस्तार है और शायद इससे परे भी। जीवन एक विशाल और जटिल समुच्चय है। यह एक ऐसे भवन की भांति है जिसमें बहुत कुछ साथ-साथ हो रहा है। आप प्रेम भी कर रहे हैं और घृणा भी, आप लोभी और ईर्ष्यालु हैं, साथ ही यह भी महसूस कर रहे हैं कि आपको ऐसा नहीं होना चाहिए। आप महत्त्वाकांक्षी हो जाते हैं जिससे या तो कुंठा हाथ लगती है या सफलता, और इसके पीछे-पीछे दुश्चिंता, भय और निष्ठुरता भी आपकी झोली में आ जाते हैं, और देर-सबेर आपको इस सबकी व्यर्थता का बोध भी हो जाता है। जीवन में युद्ध की विभीषिका और पाशविकता भी है और आतंक के माध्यम से आई शांति भी है--राष्ट्रीयता है, प्रभुसत्ता है, जो युद्ध को जन्म भी देते हैं और बढ़ावा भी। जीवन-मार्ग के अंत में या राह में कहीं भी मृत्यु आ दबोचती है। जीवन में संगठित धर्मों के बीच कलह और क्लेशपूर्ण विश्वासों के साथ ईश्वर की खोज भी रहती है। आजीविका पाने के लिए और उसे बनाये रखने के लिए संघर्ष भी यहां है, विवाह है, संतान है, रोग है और समाज व राज्य का प्रभुत्व है। जीवन यही सब है और इसके अलावा भी बहुत कुछ है। आप इस गड़बड़झाले में फँक दिए गए हैं। अधिकांशतः आप इसमें डूब जाते हैं--दुखी और थके-हारे। और यदि आप इस ढेर के शिखर पर चढ़कर स्वयं को बचा भी लें तो भी रहेंगे आप इस गड़बड़झाले का एक हिस्सा ही। यही है जिसे हम जीवन कह देते हैं--अनंत</p>

<p>frustrations and sorrows. All this is life, isn't it? And to go beyond all this is also life.</p>	<p>संघर्ष और दुख, कभी भूले-भटके छोटी-मोटी खुशी के पल वाला यह जीवन। इस सबके बारे में आपको बतायेगा कौन? बल्कि, यूँ कहें कि आप इसके बारे में जानेंगे कैसे? यदि आप में क्षमता और प्रतिभा होती है तो आप महत्त्वाकांक्षा में, प्रसिद्धि की आकांक्षा में और इनसे उपजने वाली कुंठा और दुख में आबद्ध रहते हैं। यही सब कुछ है जीवन, है न? और इस सबके पार जाना भी तो जीवन है।</p>
<p>-6-</p>	<p>-६-</p>
<p>The Vicious Frame</p>	<p>विद्वेषपूर्ण संरचना</p>
<p>That is just it. Everyone says that he must make his way through life; each one is out for himself, whether in the name of business, religion or the country. You want to become famous, and so does your neighbor, and so does his neighbor: and so it is with everyone, from the highest to the lowest in the lane. Thus we build a society based on ambition, envy, and acquisitiveness, in which each man is the enemy of another; and you are 'educated' to conform to this disintegrating society, to fit into its vicious frame.</p>	<p>यह जीवन सचमुच ऐसा ही है। प्रत्येक व्यक्ति कहता है कि उसे जीवन में आगे बढ़ना है, प्रत्येक व्यक्ति बस अपने लिए निकल पड़ता है--चाहे व्यापार के नाम पर, चाहे धर्म या देश के नाम पर; आप सुविख्यात होना चाहते हैं और यही आपका पड़ोसी चाहता है और यही उसका पड़ोसी, इस प्रकार गली के ऊंचे-नीचे हर वर्ग के लोग इसमें शामिल हो जाते हैं। इस प्रकार हमने महत्त्वाकांक्षा, ईर्ष्या और स्वामित्व-लोलुपता की नींव पर एक ऐसा समाज निर्मित कर लिया है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरे का शत्रु है, और आपको इसी विघटनकारी समाज का अनुकरण करने तथा इसकी विद्वेषपूर्ण संरचना के अनुरूप ढल जाने की 'शिक्षा-दीक्षा' दी जाती है।</p>
<p>"But what are we to do?" asked the second one. "It seems to me that we must conform to society or be destroyed. Is there any way out of it, sir?"</p>	<p>“परंतु हम करें क्या”, दूसरे ने पूछा, “मुझे लगता है कि इस समाज का हमें अनुकरण करना ही होगा, अन्यथा हम नष्ट हो जाएंगे। क्या इससे निकलने का कोई मार्ग है?”</p>
<p>At present you are so-called educated to fit into this society; your capacities are developed to enable you to make a living within the pattern. Your parents your educators your government, are all concerned with your efficiency and financial security, are they not?</p>	<p>आज आप इस समाज के अनुरूप ढलने के लिए कहने को शिक्षित किये गये हैं, इसी ढर्रे में अपना जीवन-यापन करने योग्य आपकी क्षमताएं विकसित की गयी हैं। आपके अभिभावकों, आपके शिक्षकों, आपकी सरकारों--सभी को आपकी इन क्षमताओं और वित्तीय सुरक्षा से ही सरोकार है, ऐसा ही है न?</p>
<p>Yes, they want you to be 'good citizens', which means being respectably</p>	<p>जी हां, वे चाहते हैं कि आप 'अच्छे नागरिक' बनें, अर्थात् आप सम्मानजनक रूप से</p>

ambitious, everlastingly acquisitive, and indulging in that socially accepted ruthlessness which is called competition, so that you and they may be secure. This is what constitutes being a so-called good citizen; but is it good, or something very evil?.. Love implies—doesn't it?— that those who are loved be left wholly free to grow in their fullness, to be something greater than mere social machines. Love does not compel, either openly or through the subtle threat of duties and responsibilities.	स्वामित्व-लोलुप बनें, और सामाजिक रूप से स्वीकृत निष्ठुरता में--जिसे स्पर्धा का नाम दे दिया गया है-- निमग्न रहें, ताकि आप और वे सुरक्षित रह सकें। यही सब कुछ तथाकथित अच्छा नागरिक बनने में निहित रहता है। परंतु क्या यह अच्छा है, या कुछ ऐसा, जो अशुभ है, बुरा है? प्रेम में यह बात समायी होती है कि आप जिन्हें प्रेम करते हैं उन्हें अपनी संपूर्णता तक विकसित होने के लिए पूरी स्वतंत्रता दें ताकि वे मात्र एक सामाजिक मशीनरी ही बनकर न रह जाएं। प्रेम विवश नहीं करता--न तो खुले तौर से और न अधिकार और कर्तव्य का डर दिखाकर परोक्ष रूप से।
-7-	-७-
Is Duty Love?	क्या कर्तव्य प्रेम है?
What parents call duty is not love, it's a form of compulsion; and society will support the parents, for what they are doing is very respectable..They consider it a necessity for him to conform to society, to be respectable and secure. This is called love. But is it love? Or is it fear, covered over by the word 'love?'	अभिभावक जिसे कर्तव्य बताते हैं वह प्रेम नहीं है वह तो बाध्यता का ही एक रूप है। समाज अभिभावकों का समर्थन करता है, क्योंकि वे जो कुछ कर रहे हैं वह बहुत सम्मानजनक है. वे यह आवश्यक मानते हैं कि उनके बालक द्वारा समाज का अनुसरण किया जाए, जिससे वे स्वयं सम्मानयोग्य और सुरक्षित बने रहें। इसे प्रेम कह दिया जाता है। परंतु क्या यह प्रेम है? या यह भय है जिसे प्रेम की पोशाक पहना दी गयी है?
-8-	-८-
Ambition Is Envy, Division, War	महत्त्वाकांक्षा है डाह, विभाजन और युद्ध
The older people say that you, the coming generation, must create a different world, but they don't mean it at all. On the contrary, with great thought and care they set about 'educating' you to conform to the old pattern, with some modification. Though they may talk very differently, teachers and parents, supported by the government and society in general, see to it that you are trained to conform to tradition, to accept ambition and envy as the natural way of life. They are not at all concerned with a new way	वयोवृद्ध लोग कहते हैं कि आप अर्थात् नयी पीढ़ी एक नया संसार बनाये, परंतु वे ऐसा कुछ सचमुच में होने देना नहीं चाहते। इसके विपरीत, बहुत विचारपूर्वक और सावधानीपूर्वक वे आपको पुराने ढर्रे का अनुसरण करने के लिए 'शिक्षित' कर रहे हैं--उसमें केवल नाममात्र का संशोधन करके। भले ही उनकी सोच भिन्न-भिन्न हो, परंतु सरकार और समाज से प्राप्त व्यापक समर्थन के साथ शिक्षक और अभिभावक का ध्यान इसी बात पर है कि आपको परंपराओं के अनुरूप ढलने के लिए, महत्त्वाकांक्षा और ईर्ष्या को जीवन का

<p>of life, and that is why the educator himself is not being rightly educated. The older generation has brought about this world of war, this world of antagonism and division between man and man; and the newer generation is following sedulously in its footsteps.</p>	<p>स्वाभाविक स्वरूप मानने के लिए प्रशिक्षित किया जाए। जीवन के नये स्वरूप से उनका कोई सरोकार नहीं है और यही कारण है कि शिक्षक स्वयं समुचित रूप से शिक्षित नहीं हैं। पुरानी पीढ़ी ने युद्ध के इस संसार को, मानव-मानव के बीच प्रतिद्वंद्विता और विभाजन वाले इस संसार को पाला-पोसा है, और यह नयी पीढ़ी पूरे तन-मन से उसके चरण चिहनों पर चल रही है।</p>
<p>"But we want to be rightly educated, sir. What shall we do?"</p>	<p>“परंतु, हम समुचित रूप से शिक्षित होना चाहते हैं। हम क्या करें?”</p>
<p>First of all, see very clearly one simple fact: that neither the government, nor your present teachers, nor your parents, care to educate you rightly; if they did, the world would be entirely different, and there would be no wars. So if you want to be rightly educated, you have to set about it yourself; and when you are grown up, you will then see to it that your own children are rightly educated.</p>	<p>सर्वप्रथम एक तथ्य को स्पष्ट रूप से देख लीजिए कि आपको समुचित रूप से शिक्षित किये जाने के प्रति न तो सरकार सजग-सचेत है, न आज के शिक्षक और न आपके अभिभावक। यदि ये सजग-सचेत होते तो आज का संसार कुछ और हुआ होता, कोई युद्ध न होता। यदि आपको समुचित रूप से शिक्षित होना है तो आपको ही इसका बीड़ा उठाना होगा। बड़े होने पर आप यह सुनिश्चित करेंगे कि आपके बच्चों को सही शिक्षा मिले।</p>
<p>"But how can we rightly educate ourselves? We need someone to teach us."</p>	<p>“परंतु हम स्वयं को समुचित रूप से शिक्षित कैसे कर सकते हैं? हमें शिक्षा देने वाला कोई तो होना चाहिए।”</p>
<p>You have teachers to instruct you in mathematics, in literature, and so on; but education is something deeper and wider than the mere gathering of information. Education is the cultivation of the mind so that action is not self-centered; it is learning throughout life to break down the walls which the mind builds in order to be secure, and from which arises fear with all its complexities. To be rightly educated, you have to study hard and not be lazy. Be good at games, not to beat another, but to amuse yourself. Eat the right food, and keep physically fit. Let the mind be alert and capable of dealing with the problems of life, not as a Hindu, a Communist, or a Christian, but as a human being. To be rightly educated, you have to understand yourself; you have to</p>	<p>आपको गणित या साहित्य आदि पढ़ाने वाले तो मिल ही जाते हैं, परंतु शिक्षा इन सूचनाओं के संग्रह से कहीं अधिक गहन और विस्तृत होती है। शिक्षा से अभिप्राय मन को इस प्रकार परिष्कृत करना है जिससे इसकी क्रियाएं अहं-केंद्रित न रहें, और, आजीवन उन दीवारों को ध्वस्त करते रहना सीखना है जिन्हें मन सुरक्षा के नाम पर खड़ी करता रहता है, और जिनके कारण भय और तमाम तरह की जटिलताएं पैदा हो जाती हैं। समुचित रूप से शिक्षित होने के लिए आपको सघन अध्ययन करना होगा और प्रमाद से बचना होगा। अच्छे खिलाड़ी बनिए--दूसरों को हराने के लिए नहीं बल्कि मन-बहलाव के लिए। उचित प्रकार का भोजन कीजिए और स्वयं को स्वस्थ रखिए। मन को सजग-सचेत बनाए रखिए, उसे जीवन की समस्याओं से निपटने के लिए सक्षम होने दीजिए--किसी हिंदू, कम्यूनिस्ट या किसी चीनी</p>

keep on learning about yourself. When you stop learning, life becomes ugly and sorrowful. Without goodness and love, you are not rightly educated.	की समस्या के प्रति नहीं, अपितु मानव मात्र की समस्या के प्रति। समुचित रूप से शिक्षित होने के लिए आपको स्वयं को समझना होगा, स्वयं को जानना जारी रखना होगा। जब आप सीखना बंद कर देते हैं तब जीवन कुरूप और दुखमय हो जाता है। यदि आप में भलमनसाहत और प्रेम नहीं है तो आप समुचित रूप से शिक्षित नहीं हैं।
CHAPTER SIX	अध्याय छः
Desire and Longing	इच्छा और लालसा
-1-	- 9-
The Pain in Desire Is Fear of Frustration	इच्छा में जो पीड़ा है वह कुंठा का भय है
For most of us, desire is quite a problem—the desire for property; for position, for power, for comfort, for immortality, for continuity, the desire to be loved, to have something permanent, satisfying, lasting, something which is beyond time. Now, what is desire? What is this thing that is urging, compelling us?—which doesn't mean that we should be satisfied with what we have or with what we are, which is merely the opposite of what we want. We are trying to see what desire is, and if we can go into it tentatively, hesitantly, I think we will bring about a transformation which is not a mere substitution of one object of desire for another object of desire. But this is generally what we mean by "change," is it not? Being dissatisfied with one particular object of desire, we find a substitute for it. We are everlastingly moving from one object of desire to another which we consider to be higher, nobler, more refined, but however refined, desire is still desire, and in this movement of desire there is endless struggle, the conflict of the opposites.	अधिकांशतः हमारे लिए इच्छा एक समस्या ही है--धन-संपदा की इच्छा, प्रतिष्ठा की, शक्ति की, ऐशो-आराम की, अमरता की, निरंतरता की इच्छा, प्रेम पाने की इच्छा, किसी ऐसी चीज़ की इच्छा जो स्थायी हो, तृप्तिदायी हो, कालजयी हो, कुछ ऐसी चीज़ जो काल से परे हो। तो इच्छा है क्या? यह ऐसी क्या चीज़ है जो हमें उकसाती रहती है, हमारे पीछे पड़ी रहती है? अभिप्राय यह नहीं है कि जो कुछ हमारे पास है, या जो कुछ हम हैं, उससे हमें संतुष्ट रहना चाहिए--यह तो केवल हमारी इच्छा का विलोम, उसका विपरीत हुआ। हम तो यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि इच्छा है क्या, और यदि हम परीक्षण करते हुए और शंकाशील रहते हुए इसकी गहराई में जाएंगे तो मैं सोचता हूँ कि हममें एक कायाकल्प, एक बुनियादी बदलाव होगा और यह बदलाव एक इच्छित वस्तु के स्थान पर दूसरी इच्छित वस्तु लाने जैसा विकल्प नहीं होगा। परंतु ऐसे विकल्प को ही हम सामान्यतः 'परिवर्तन' कहते हैं, है न? किसी इच्छित वस्तु से असंतुष्ट होकर हम उसका विकल्प तलाशने लगते हैं। किसी एक इच्छित वस्तु से उस दूसरी वस्तु की ओर हम अनंत रूप से दौड़ते रहते हैं जो पहली से श्रेष्ठतर हो, अधिक उत्कृष्ट हो, परंतु कितनी ही उत्कृष्ट क्यों न हो, इच्छा तो इच्छा ही रहेगी। और, इच्छा की इस दौड़ में अनंत संघर्ष है, प्रतिकूलताओं का संघर्ष है।